दक्षिण एशिया में नाभिकीय प्रसार तथा शान्ति व सुरक्षा की सम्भावनाएं

डॉ0 जितेन्द्र कुमार,
असिस्टेन्ट प्रोफेसर
रक्षा एवं स्त्रातजिक विभाग,
दी0द0उ0गो0वि0वि0, गोरखपुर।
email- jeetuphd@gmail.com
Mobile- 8182834300

सारांश

द्वितीय विश्व युद्ध में परमाणु शस्त्रों के प्रयोग की विभीषिका ने समस्त राष्ट्रों को अपनी सुरक्षा के प्रति सचेत कर दिया, जिसके फलस्वरूप विश्व के कई राष्ट्र परमाणु शस्त्रों के दौड़ में शामिल हो गये और इसी क्रम में उदय हुआ (P-5) पाँच परमाणु हथियार रखने वाले घोषित राष्ट्र। जिससे चीन दक्षिण एशिया का शक्तिशाली राष्ट्र और 1962 के भारत–चीन युद्ध के पश्चात् भारत का प्रमुख प्रतिद्वन्द्वी था। अतः चीन की परमाणु शक्ति के भारत को प्रेरित किया जिसके फलस्वरूप भारत ने भी 1974 और 1998 में परमाणु परीक्षण कर परमाणु सम्पन्न राष्ट्र होने की पुष्टि की और इसी के साथ दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रों की होड़ लग गई। पाकिस्तान ने भी 1998 परमाणु परीक्षण कर अपनी उपस्थिति दर्ज करा दी। लेकिन यह सिलसिला यही नहीं थमा। आज दक्षिण एशिया में परमाणु शस्त्रों को लेकर उथल–पुथल मचा हुआ है क्योंकि आज दक्षिण एशिया का एक छोटा राष्ट्र म्यांमार भी परमाणु क्षमता चीन की मदद से परमाणु क्षमता हासिल करने की ओर अग्रसर है। लेकिन इतिहास से पता चलता है कि किन्हीं दो परमाणु सम्पन्न देशों के मध्य अभी तक आणविक शस्त्रों का प्रयोग नहीं हुआ है। ऐसी स्थिति में विकसित या विकासशील राष्ट्र इसकी स्पर्धा में पड़कर क्या हासिल करेंगे? क्या इसका उपयोग युद्ध के लिए होगा या भविष्य में नाभिकीय ऊर्जा के तहत राष्ट्र के आर्थिक विकास में किया जायेगा। प्रस्तुत शोध पत्र इन्हीं परिस्थितियों का विश्लेषण करते हुए ''दक्षिण एशिया में नाभिकीय प्रसार तथा शान्ति व सुरक्षा की सम्भावनाएं'' को प्रकट किया गया है।

मुख्य शब्द : दक्षिण एशिया, नाभिकीय हथियार, भारत, पाकिस्तान , आतंकवाद।

प्रस्तावना :

दक्षिण एशिया की आबादी दुनिया का पांचवां हिस्सा है और दक्षिण एशिया के ही देश महान सभ्यता के उत्तराधिकारी भी हैं। इसके बावजूद दक्षिण एशियाई देश ही गरीबी,

अशिक्षा एवं आतंकवाद जैसी गम्भीर समस्याओं का सामना कर रहे हैं। एक रिपोर्ट के अनुसार उत्तरी देश आपस में 60 प्रतिशत से अधिक व्यापार करते हैं, जबकि दक्षिण एशियाई देश 30 प्रतिशत व्यापार करते हैं। सार्क देशों के बीच अन्तर क्षेत्रीय व्यापार विश्व व्यापार का सिर्फ 3.4 प्रतिशत हैं; उत्तरी अमेरिका में 37.3 प्रतिशत तथा यूरोपीय संघ में लगभग 63.4 प्रतिशत हैं। विश्व के एक प्रतिशत अमीरों की आय दुनिया के 57 प्रतिशत गरीबों की कुल आय से भी ज्यादा है। दुनिया के लगभग 25 प्रतिशत अमीरों का विश्व की 75 प्रतिशत आय पर कब्जा है। विकसित एवं विकासशील देशों के असमानता की स्थिति यह है कि विश्व में सर्वाधिक 10 प्रतिशत अमीर जितना कमाते हैं, उनका 1.5 प्रतिशत अंश ही 10 प्रतिशत गरीब कमा पाते हैं।

पिछले कुछ दिनों में, दक्षिण एशिया में नाभिकीय अस्थिरता तथा इस क्षेत्र में हथियारों की होड़ आरम्भ होने की आशंका प्रकट करते हुए रक्षा विशेषज्ञों के अनेक लेख एवं प्रकाशन देखने को मिले कि दक्षिण एशिया में पुनः एक बार परमाणु हथियारों की प्रतिस्पर्धा का दौर प्रारम्भ हो चुका है। इस बार हथियार प्रतियोगिता का आयोजनकर्ता पाकिस्तान है और इसमें भाग लेने वाले प्रतियोगियों में भारत व चीन भी है।[1] पाकिस्तान में वर्तमान समय में आधिकारिक तौर पर घोषित दो परमाणु रियेक्टर कार्यरत हैं। इसमें से एक कराची न्यूक्लियर पावर प्लांट (KANUPP) और दूसरा चश्मा न्यूक्लियर पावार प्लांट–1 (CHANUPP-1) है।

कराची से 15 मील पश्चिम में स्थित कराची प्लांकट ''1972'' से चालू है। इसकी कुल क्षमता 137 मेगावाट है। चश्मा प्लांट की स्थापना पाकिस्तान ने चीन की सहायता से की है। ''चश्मा प्लांट का निर्माण 1992 में शुरू हुआ था और यह सितंबर, 2000 से पूरी तरह कार्यरता है। चश्मा–1 की क्षमता 300 मेगावाट है। इनके अलावा, पाकिस्तान ने 8 अप्रैल, 2005 से चश्मा–2 (CHASNUPP-2) का निर्माण शुरू कर दिया है। चश्मा–2 की क्षमता 300 मेगावाट होगी।'' इन तीनों परमाणु रिएक्टरों के अलावा खुशाब में निर्माणाधीन रिएक्टर का उद्देश्य बिल्कुल अलग है। चीन की सहायता से 1998 में निर्मित एक प्लांट पहले से ही खुशाब में कार्यरत है, जिसकी क्षमता 40 मेगावाट है। इस हैवीवाटर रिएक्टर से पाकिस्तान एक साल में 8–10 किग्रा प्लूटोनियम का उत्पादन कर सकता है। उससे पाकिस्तान बड़ी संख्या में परमाणु बम बनाने की क्षमता हासिल कर लेगा। यदि पाकिस्तान दूसरी श्रेणी के प्लूटोनियम हथियार बनाने की कोशिश करता है तो भारत अपने हथियारों

की संख्या में वृद्धि अवश्य करेगा और भारत यह कार्य करता है तो चीन पुनः नए परमाणु हथियार बनाने की शुरूआत कर देगा।[2]

अतः इसका परिणाम यह होगा कि पहले से ही बारूद के ढ़ेर पर बैठा दक्षिण–एशिया हथियारों की अन्धी दौड़ का मैदान बन जायेगा : मई, 1974 में भारत द्वारा पोखरन प्रथम परीक्षण के उपरान्त पाकिस्तान को नाभिकीय हथियार प्राप्त करने की महत्वाकांक्षाओं के चीन ने उत्प्रेरक का कार्य करते हुए पाकिस्तान को हर प्रकार की सहायता प्रदान करने की उत्सुकता दिखाई। सच तो यह है कि चीन के सहयोग के बिना पाकिस्तान का नाभिकीय शस्त्र कार्यक्रम शायद ही सफल हो पाता। सन् 1976 में चीन व पाकिस्तान के मध्य हुए नाभिकीय समझौते के फलस्वरूप चीन ने उसे नाभिकीय विद्युत भट्टी की भी आपूर्ति की।[3] 1995 में यह तथ्य भी उजागर हुआ कि पाकिस्तान के कहूटा स्थित अब्दूल क्युब खान शोध प्रयोगशाला हेतु पांच हजार रिंग मैंग्नेट्स की आपूर्ति की, जिसका उपयोग नाभिकीय हथियारों हेतु यूरेनियम संवर्धन में किया जाता है। इतना ही नहीं चश्मा व खुशाब जैसे पाकिस्तानी रिएक्टरों के निर्माण में चीन का पूरा सहयोग रहा है।[4]

शोध का उद्देश्य :

1. भारत विश्व का अकेला देश है जिसका परमाणु ऊर्जा कार्यक्रम पहले शान्तिपूर्ण उद्देश्यों के लिए विकसित किया गया और इसके प्रतिफल के रूप में ही भारत को परमाणु शस्त्र कार्यक्रम चलाने की क्षमता हासिल हुई। जबकि विश्व के दूसरे राष्ट्र अमेरिका, सोवियत संघ, चीन, फ्रांस, ब्रिटेन ने परमाणु ऊर्जा पर शोध एवं विकास कार्य परमाणु बम बनाने के इरादे से ही शुरू किया था और फिर बाद में इसके औद्योगिक लाभों का दोहन किया।
2. पिछले कुछ समय से वैश्विक राजनीति में एशिया महत्वपूर्ण बना हुआ है। इसके केन्द्र में तमान समीकरण व नीतियां (आर्थिक व राजनीतिक) निहित है। ये समीकरण जिन पर आधारित है होने है उनकी भूमिका में भारत–जापान, आस्ट्रेलिया और चीन जैसे देश है। तमाम रिपोर्टों से लगता है कि भावी विश्व की तस्वीर बहुत हद तक इन्हीं समीकरणों पर निर्भर करेगी।
3. प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य यह है कि ''क्या वास्तव में अमेरिका, रूस या चीन एशिया में शान्ति स्थापना करने के लिए चिंतित है? या इस प्रकार व्यूह रचना कर वे एशिया पर वर्चस्व स्थापित करने के एक नया दौर की शुरूआत कर रहे हैं।

अनुसंधान क्रिया विधि :

1. इस शोध पत्र में द्वितीयक समंको का प्रयोग किया गया है। द्वितीयक समंको के लिए सामग्री बेवसाइटों, सरकारी गजट एवं पत्रिकाओं से प्राप्त किया गया है।
2. शोध पत्र में विभिन्न आयामों की व्याख्या ऐतिहासिक, सैद्धान्तिक–तुलनात्मक एवं विश्लेषणात्मक पद्धतियों का अध्ययन किया जायेगा।
3. साक्षात्कार विधि व प्रश्नावली विधि के द्वारा विचारों व आंकड़ों का संकीलन किया जायेगा।

भारत–पाक परमाणु अस्त्र कार्यक्रम से सशंकित क्यों?

भारत लम्बे समय से आणविक भय की छाया में रहा है; लेकिन चीन का कभी विरोध नहीं किया। हिन्द महासागर में महाशक्तियों के परमाणु शस्त्र सम्पन्न नौ–सैनिक अड्डे भी हैं, लेकिन भारत ने कभी भी भय प्रकट नहीं किया। आखिर पाकिस्तान ही उसके भय का प्रमुख कारण क्यों है? क्यों भारतीय राजनयिक बार–बार यह वक्तव्य देते रहे हैं कि पाकिस्तान ने यदि परमाणु बम बनाया तो, भारत भी अपने परमाणु बम न बनाने की नीति पर पुनर्विचार करेगा। उन्होंने कभी यह नहीं कहां कि चीन के परमाणु शस्त्र से भारत की सुरक्षा को खतरा है। यदि विचार किया जाय तो पता चलता है कि पाक परमाणु शस्त्र कार्यक्रम के प्रति भारतीय चिन्ता के निम्नवत् कारण हैं[5]–

1. पाकिस्तान में अधिकांश समय सैनिक शासन रहा है। कारगिल को छोड़कर सभी भारत–पाक युद्ध पाकिस्तान ने सैनिक शासन के नेतृत्व में ही लड़ा। भारत से कब, कैसे और किन–किन शस्त्रों से युद्ध करना है, यह सब वहां के उच्च सैनिक अधिकारी ही तय करते रहे हैं। इस तथ्य को देखते हुए कहा जा सकता है कि पाकिस्तानी परमाणु बम का भारत के विरूद्ध प्रयोग की सम्भावनाएं अधिक हैं।
2. पाकिस्तान ने जब–जब अपने मित्र राष्ट्रों के सहयोग से उच्च स्तर की सामरिकी तैयारी की है, तो वह अपनी श्रेष्ठता प्रमाणित करने के लिए भारत पर आक्रमण किया है, इतिहास इस बात का साक्षी है।
3. पाकिस्तान एक कमजोर राष्ट्र है और 'मरता क्या नहीं करता' के सिद्धान्त के तहत वह अपनी हार बचाने के लिए व भारत पर अपनी पहली जीत का तोहफा अपने

देशवासियों को देने के लिए भारत के विरूद्ध अणु बमों का प्रयोग कर सकता है। भारत और पाकिस्तान के मध्य अनगिनत बात सीमाओं पर झडपे हो चुकी है। सन् 1947–47, 1965, 1971 तथा 1999 में युद्ध भी हो चुके हैं। इस सभी युद्धों में पाकिस्तान पराजित हुआ है। किसी भी पराजित देश की यह मानसिकता हो सकती है कि वह कुछ समय के लिए ही सही अपने शत्रु को पराजित कर दे, जिससे उसके देश तथा विश्व में उसे वाहवाही मिल सके। अतः पाकिस्तानी शासन इस लोभ को छोड़ नहीं सकेंगे।[6]

4. चीन, अमेरिका सहित अनेक राष्ट्र 'पाकिस्तान' के ऐसे मित्र हैं, जो भारत के प्रति आन्तरिक रूप से ईर्ष्यालु हैं और किसी न किसी रूप में भारत को अपने से नीचा दिखाना चाहिते हैं, क्योंकि भारत ने कभी भी इनके प्रभाव में रहना स्वीकार नहीं किया और पाक परमाणु शस्त्र कार्यक्रम के जड़ में भी यहीं राष्ट्र हैं, जो भारत के सामरिक स्थलों की जासूसी भी कराते हैं और भारत को सामरिक दृष्टि से पंगु बनाने के लिए पाकिस्तान को उकसा सकते हैं, जिससे पाकिस्तान अपने परमाणु बमों का प्रयोग भारतीय क्षेत्रों पर कर सकता है। प्रतिरक्षा रिपोर्ट के अनुसार, परमाणु अस्त्रों का जखीरा और प्रक्षेपास्त्र दक्षिण एशिया की सुरक्षा के लिए गहरी चिन्ता का विषय बने हुए हैं।[7]

दक्षिण एशिया में परमाणु हथियारों के भण्डार की विध्वंसक क्षमता निरन्तर बढ़ रही है। नये देशों द्वारा परमाणु हथियार प्राप्त करने की आशंका भी बढ़ रही है तथा इन महाविनाशक हथियारों का वास्तविक उपयोग नहीं होगा, यह विश्वास भी टूटता लग रहा है। विश्व शान्ति के लिए सबसे चुनौतीपूर्ण स्थिति है कि आतंकवादी संगठनों के हाथ में परमाणु हथियार नहीं पहुंचने चाहिए। अमूमन सभी परमाणु सम्पन्न देशों के पास यह सुरक्षा व्यवस्था मौजूद है, लेकिन पाकिस्तान के बारे में निश्चित तौर पर ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता। आतंकवादियों के हाथ परमाणु हथियार या तो कालाबाजारी के जरिए पहुंच सकते हैं या आतंकी विचारधारा से ताल्लुक रखने वालों से। दुर्भाग्य से यह दोनों आशंकाएं पाकिस्तान पर सटीक बैठती हैं, क्योंकि पाकिस्तान के सैनिक प्रतिष्ठान और आई0एस0आई0 का एक बड़ा वर्ग तालिबान व अलकायदा के प्रति सहानुभूति रखता है। खुद अमेरिका की खुफिया एजेंसियों ने आशंका जताई है कि पाकिस्तान के परमाणु हथियार जेहादियों के हाथ लग सकते हैं।[8]

पाकिस्तान बार–बार यह बयान दे रहा है कि उसके परमाणु बम सुरक्षित हाथों में हैं, लेकिन क्या गारण्टी है कि पाकिस्तान का परमाणु प्रतिष्ठान भविष्य में ऐसी सेंध का शिकार नहीं होगा? क्योंकि खुद पाकिस्तान में काहूटा का यूरेनियम प्लांट अब्दुल कादिर खान के हालैंड से चुराए गए डिजाइन पर आधारित हैं। इसके अतिरिक्त उत्तर कोरिया और पाकिस्तान के बीच भी गहरा परमाणु रिश्ता रह चुका है।[9]

डॉ0 अब्दुल कादिर खान का गोपनीय नाभिकीय प्रसार अब दुनिया के लिए रहस्य नहीं रहा। खान की प्रयोगशाला के कतिपय वैज्ञानिकों के ओसामा बिन लादेन से सम्पर्क थे। यह भी माना जा रहा है कि यदि कभी अमेरिका या किसी पश्चिमी यूरोपीय शहर में 'डर्टी बम' का इस्तेमाल हुआ तो उसका मूल पाकिस्तान में ही निहित होगा। भारत ने जहां नाभिकीय हथियारों का प्रथम इस्तेमाल न करने की नीति अपनायी हैं, वहीं पाकिस्तान ने ऐसा नहीं किया। लिहाजा इस महाद्वीप में यदि कभी नाभिकीय हथियारों का प्रयोग किया गया तो यह पाकिस्तान की ही ओर से होगा। भारतीय नाभिकीय सिद्धान्त यह घोषित करता है कि भारत पहले नाभिकीय हथियारों का इस्तेमाल नहीं करेगा, लेकिन यदि भारतीय क्षेत्र या सेना पर नाभिकीय हमला किया गया तो भारत इसका जवाब दण्डात्मक रूप से देगा।[10]

भारत के पास इतना परम्परागत सैन्य बल है कि वह पाकिस्तान के किसी भी हमले का नाभिकीय हथियारों का इस्तेमाल किये बिना सफलतापूर्वक सामना कर सकता है। इससे भी अधिक भारत यथा स्थिति वाली एक शक्ति है। तात्पर्य यह है कि यद्यपि भारत पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर को अपना भाग मानता है, लेकिन पिछले 60 वर्षों में उसने कभी भी अपना यह हक हासिल करने के लिये सैन्य बल का सहारा नहीं लिया। इसके विपरीत भारत समय–समय पर नियंत्रण रेखा को अन्तर्राष्ट्रीय सीमा में बदलने का प्रस्ताव रखता रहा। इन परिस्थितियों में इस क्षेत्र में कोई भी नाभिकीय अस्थिरता पाकिस्तान की ओर से ही उत्पन्न होगी। पाकिस्तान के बारे में यह भी किसी से छिपा नहीं है कि वह आतंकवाद का प्रमुख केन्द्र हैं।[11] तालिबान को उसने पोषित किया, लादेन तथा अल–जवाहिरी के पाकिस्तान में छिपे होने की पुष्ट खबरें हैं। मुशर्रफ खुद स्वीकार करते हैं कि एक बड़ी संख्या में जेहादी संगठन पाकिस्तान से अपनी गतिविधियां संचालित कर रहे है।[12] ऐसा नहीं है कि अमेरिकी रक्षा प्रतिष्ठान विश्व के समकक्ष पाकिस्तान नाभिकीय तंत्र द्वारा उत्पन्न खतरे से अवगत न हो। पाकिस्तान और भारत की किसी नाभिकीय टकराव का परिणाम चाहें जो हो, यह दोनों देशों में भयानक विनाशलीला और जन–हानि को जन्म

देगा। अफरा–तफरी और अराजकता के वातावरण में नाभिकीय हथियारों और सामग्री के चोरी होने या जेहादियों के हाथ पड़ जाने का भी बहुत अधिक खतरा है। पाकिस्तान में यदि ऐसे जेहादियों ने नाभिकीय हथियारों पर कब्जा जमा लिया तो उनका निशाना अमेरिका और पश्चिमी यूरोप होगा। लिहाजा यह अमेरिका तथा पश्चिमी यूरोप, दोनों के हित में है कि वे यह सुनिश्चित करें कि पाकिस्तान नाभिकीय हथियारों का इस्तेमाल न कर सके। पाकिस्तान को यह बताना चाहिए कि यदि उसने भारत के खिलाफ नाभिकीय हथियारों का इस्तेमाल किया तो अमेरिका और यूरोप चुप नहीं बैठेगा।[13]

निष्कर्ष–

वर्तमान समय की मांग है कि दक्षिण एशिया के राज्य आपसी संघर्षों, प्रतिस्पर्धा, शक्ति के लिए संघर्ष और शक्ति संतुलन जैसी अवधारणाओं से उपर उठकर क्षेत्रीय विकास की ओर ध्यान दें, क्योंकि आर्थिक विकास के अभाव में ही राष्ट्रों के मध्य प्रतिस्पर्धा रहती है। दक्षिण एशिया के देशों को चाहिए कि वे सार्क जैसे संगठनों को मजबूत करें तथा आपस में व्यापार की एकल दरें, बीजा प्रावधान की समाप्ति तथा मुक्त व्यापार को बढ़ावा दें, जिससे आर्थिक विकास हो सके, साथ ही साथ दक्षिण एशिया के राष्ट्रों को परमाणु हथियारों के प्रसार को रोकने के लिए ईमानदारीपूर्वक एवं पारदर्शिता के साथ बनाये गये नियमों का पालन करे।

हमें वक्त के अनुरूप नई चालें चलनी होगी तथा उन मूल्यों की रक्षा के लिए सब कुछ दाव पर लगाने तथा कष्ट सहने के लिए तैयार रहना पड़ेगा जो हमारी जीवन पद्धति की बुनियाद है। परमाणु युद्ध के खेल में मात्र कुछ सेकण्डों में धरती विरान हो जायेगी। सामरिक दृष्टि से इन कुछ सेकण्डों की इतनी कीमत है कि पाकिस्तान द्वारा परमाणु हमले की स्थिति के चन्द सेकेण्डों की चूक से ही न केवल भारत और पाकिस्तान बल्कि दक्षिण एशिया के लगभग सभी देश तबाह हो सकते है।

पाकिस्तान परमाणु हथियार प्रयोग करने की धमकी और ब्लैकमेल का सहारा लेकर भारतीय उपमहाद्वीप में आतंकवाद का बढ़ावा देता रहा है। उसे यह विश्वास है कि उसके परमाणु बम को देखते हुए भारत उस पर कोई कार्यवाही नहीं करेगा। सर्जिकल स्ट्राइक करके भारत ने पाकिस्तान को परमाणु बम की धमकी का छोटा ट्रेलर दिखाया है। भारत ने यह स्पष्ट कर दिया है कि भारत पाकिस्तान की धमकियों की परवाह करने वाला नहीं है और उसके पास भी शक्तिशाली 'महकाल' परमाणु हथियार मौजूद है।

अतः कुल मिलाकर स्थिति यह है कि दक्षिण एशिया ऐसे गहरे गड्ढ़े में हैं, जिसकी गहराई का अन्दाजा हमें स्वयं नहीं है हमें एक सिरे से लेकर दूसरे सिरे तक बहुत कुछ करने की आवश्यकता है, जिनके बारे में कई बार सुझाव प्रस्तुत किये जा चुके हैं। लेकिन इसके लिए हमें सार्वजनिक जीवन में बेहतरी लानी होगी तथा भारत को अपनी शान्ति व सुरक्षा को मिलने वाली चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए दीर्घकालीन आवश्यकता के अनुरूप ही नीति बदलनी होगी। भारत ने स्पष्ट किया है कि मौजूदा हालात में दक्षिण एशिया को नाभिकीय अस्त्र मुक्त क्षेत्र नहीं बनाया जा सकता है। यह असम्भव है। इसके लिए नाभिकीय अस्त्र मुक्त अभियान को क्षेत्रीय नहीं बल्कि अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर देखा जाना चाहिए, क्योंकि इससे ही पूरी दुनिया को विनाश से बचाया जा सकता है।

सन्दर्भ

1. ओझा, एन0एन0, ''भारत एवं विश्व अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दे'', क्रानिकल पब्लिकेशन, दिल्ली, 2009.
2. समसामयिक महासागर, अक्टूबर, 2006, पेज–60.
3. पंत, पुष्पेश, अन्तर्राष्ट्रीय संगठन, टाटा माइग्रा हिल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2008, पेज–125–130.
4. पाण्डेय, रामसूरत, ''राष्ट्रीय सुरक्षा एवं अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध'' प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2008, पेज–244, ISBN-978-81-7977-261-4.
5. चाणक्य, सिविल सर्विसेज, मई, 2003, पेज–20–21.
6. प्रतियोगिता दर्पण, अक्टूबर, 1998, पेज–540–42.
7. शौरी, अरूण, चीन मित्र या–?, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, 2006, पेज–6–8.
8. सुबाष धूलिया, ''अमेरिकी निशाने पर अब आया पाकिस्तान'', अमर उजाला, 12 जनवरी, 2008.
9. गुप्त, परशुराम, परमाणु निरस्त्रीकरण, प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 1985, पेज–67.
10. के0, सुब्रह्मण्यम, ''नाभिकीय खतरे का सच'', दैनिक जागरण, 08 जुलाई, 2007.
11. सिंह, अशोक कुमार, ''राष्ट्रीय सुरक्षा के आयाम'', प्रकाश बुक डिपो, बरेली, 2019, पेज–192, ISBN-978-81-7977-645-2.
12. सिंह, जगजीत, ''भारतीय परमाणु अस्त्र'', प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली, पेज–188–92.

13. Khurana, Ashish, ":Proliferation in India-Arms and the man", U.S.I. Journal, July-September, 1997, Page-379.